फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया

Published

Reflections on Marx's Critique of Political Economy

Reprinted

a ballad against work

The books are free.

नई सीरीज नम्बर 114 दिसम्बर 1997

छोटू गुस्तारव बना खबरची

खबरची यानि कि रिपोर्टर। ये कुछ खबरें हैं, कुछ चुटकियाँ हैं किन्तु इनके पीछे एक दर्द है। उस दर्द को महसूस करेंगे तो मेरा दावा है आप हँस नहीं पायेंगे। ये खबरें/चुटकियाँ दिल बहलाने को भी नहीं हैं। "समीप" जी के शब्दों में "दिल को बहलाने को एक लोकसभा है तो सही" जहाँ कब कोई सरकार औंधे मुँह गिर जाये, पता नहीं।

आपको कैसा लगता है

★ जब आपको आठ सैक्टर ई एस आई का क्लर्क बताता है कि आपका रिकार्ड अभी पिछली ई एस आई से नहीं आया है।

★ आपके प्रोविडेन्ट फन्ड निकलवाने के फार्म पर आपके हस्ताक्षर आपके पिछले दस्तखत से मेल नहीं खाते।

★ जब ई एस आई का डाक्टर आपसे घर मिलने को कहता है।

★ जब आपको ई एस आई डिस्पैन्सरी में पर्ची बनाने वाला क्लर्क कहता है कि आपको दवा नहीं मिलेगी क्योंकि आपकी कम्पनी ने ई एस आई का पैसा जमा नहीं कराया है।

● मरीज को स्टैचर पर लाद कर वार्ड बॉय जल्दी से ऑपरेशन थियेटर की तरफ ले जा रहे थे। पीछे-पीछे नर्स भाग रही थी और उससे काफी पीछे डॉक्टर आ रहा था। नर्स चीखी, "डॉक्टर साहब जल्दी से आइये मरीज की साँस अभी चल रही है।" इस पर डॉक्टर बोला "कोई फायदा नहीं नर्स। दी पेशन्ट इज डेड। आओ मैं डैथ सर्टीफिकेट बना देता हूँ।" नर्स बोली, "लेकिन डॉक्टर, मरीज की साँस तो चल रही है।" डॉक्टर ने जवाब दिया, "वॉट डू यू मीन बाई साँस? देखती नहीं उसने हाई पालीमर की वर्दी पहन रखी है और सब जानते हैं कि हाई पोलीमर या नूकैम या हिन्दुस्तान इन्डस्ट्रीज का वरकर जिन्दा ई एस आई में आ ही नहीं सकता।"

● एक व्यक्ति के पेट में दर्द होने पर वह भागा-भागा डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने काफी चैकअप करने के बाद कहा, "तुम्हारे पेट में दर्द क्यों है कुछ समझ में नहीं आ रहा। खैर। तुम काम कहाँ करते हो?" "जी आटोपिन्स में", मरीज ने दर्द से कराहते हुये कहा। डॉक्टर ने जल्दी से जेब से दस रुपये निकाल कर मरीज को देते हुये कहा, "बेटे ऐसा करो तुम भूखे होगे पहले खाना खा कर आओ। यदि फिर भी दर्द रहा तो ई एस आई जाना पड़ेगा क्योंकि प्राइवेट इलाज का खर्च आटोपिन्स का मजदूर अफोर्ड नहीं कर सकता।"

● एक भिखारी ने बेहद गुस्से में झल्लाते हुये दूसरे भिखारी को कहा, "यार मेरे ससुर ने मुझे बहुत धोखा दिया है। उसने अपना झालानी टूल्स वाला अड्डा जहाँ बैठ कर वो भीख माँगता था, मुझे दहेज में दिया है।"

● उग्र भीड़ पर डण्डे बरसाती पुलिस में से एक पुलिसवाले का हाथ अचानक रुक गया। दूसरे पुलिसवाले ने पूछा, "क्या बात है? हाथ क्यों रोक लिया? पीट सालों को। आज बहुत दिन बाद पिटाई का मौका मिल रहा है।" पहला पुलिसवाला चेहरे पर दुख के भाव लाते हुये बोला, "क्या करूँ यार? अचानक सामने युनीक आटो का मजदूर आ गया। अब मैं क्या मारूँ उसको, वो तो बेचारा पहले से ही मरा हुआ है।"

● अखिल भारतीय दाल फ्राई एसोसियेशन ने फरीदाबाद में कार्यरत ट्रेड यूनियनों का विरोध करते हुये कहा कि वे कम्पनी मैनेजमेन्टों से मिल कर तालाबन्दी को प्राथमिकता दे रही हैं। इससे एसोसियेशन के सदस्यों को प्रबल आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने चेतावनी दी कि प्रताप स्टील और ईस्ट इंडिया की तरह अन्य कम्पनियों में भी तालाबन्दी हुई तो एसोसियेशन के सदस्यों को आत्महत्या जैसा घोर अपराध करना पड़ सकता है।

पेश है आपके दिल की आवाज़

यह डॉक्युमेन्ट, यह मीटिंग्स, यह फीचर्स की दुनियाँ
यह इन्सान के दुश्मन लॉंग आवर्स की दुनियाँ
यह डैड्लाइन्स के भूखे, मैनेजमेन्ट की दुनियाँ
यह रिलीज अगर शिप हो जाये तो क्या है?
यह रिलीज अगर शिप हो जाये तो क्या है?

यहाँ इक खिलौना है प्रोग्रामर की हस्ती
यह बस्ती है फटीचर बग फिक्सर्स की बस्ती
यहाँ पर तो रेजेज हैं इनफ्लेशन से सस्ती
यह रिव्यु अगर हो भी जाये तो क्या है?
यह रिव्यु अगर हो भी जाये तो क्या है?

यह डॉक्युमेन्ट, यह प्रोसेस, यह मीटिंग की दुनियाँ
यह इन्सान के दुश्मन लेट स्टे की दुनियाँ
यह क्वालिटी के भूखे एस डी एम्स की दुनियाँ
यह प्रोडक्ट अगर बन भी जाये तो क्या है?
यह प्रोडक्ट अगर बन भी जाये तो क्या है?

हर इक जिस्म घायल, हर इक रूह प्यासी
दिमागों में उलझन, दिलों में उदासी
यह ऑफिस है या आलमे बदहवासी
यह प्रोडक्ट अगर बन भी जाये तो क्या है?

यहाँ इक खिलौना है इम्पलाई की हस्ती
यह हस्ती है मुर्दापरस्तों की बस्ती
यहाँ पर तो है इम्पलॉयमेन्ट, प्रोसेस से सस्ती
यह प्रोडक्ट अगर बन भी जाये तो क्या है?

जला दो इसे फूँक डालो यह डॉक्युमेन्ट्स
मेरे सामने से हटा दो यह प्रोसेस
तुम्हारी है तुम्ही सम्भालो यह क्वालिटी
यह प्रोडक्ट अगर चल भी जाये तो क्या है?

23.9.97 – कम्प्युटर सॉफ्टवेयर का एक मजदूर

★ मजदूर हक्का-बक्का हैं। तालाबन्दी और हड़ताल के जरिये **एलमेक टूल्स** और **सुपर रिबन** मैनेजमेन्ट तथा यूनियन ने 55 मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया है।

★ ओल्ड फरीदाबाद में **ड्युरेबल** फैक्ट्री में मजदूरों को पाँच महीनों से तनखा नहीं दी गई है।

★ 1 दिसम्बर को एस्कोर्ट्स यामाहा फैक्ट्री की बगल में नूकैम ग्रुप से सम्बन्धित रतन चन्द हरजस राय की कप-प्लेट फैक्ट्री की गैस लीक से फैक्ट्री के पीछे स्थित **स्कूल के 65 बच्चे बेहोश हो गए।**

इस अंक की हम पाँच हजार प्रतियाँ ही फ्री बाँट पा रहे हैं। पाँच हजार मजदूर अगर हर महीने एक-एक रुपया दें तो दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

हितकारी पोट्रीज

हितकारी पोट्रीज लि., 63-64 इन्डस्ट्रीयल एरिया के मजदूरों की जवानी को धूल -धुँआ-गैस खा गये और अब जो थोड़ी हड्डी बाकी है वह चारपाई पर बैठने के लायक नहीं रही है। मजदूर अपने घरबार, बाल-बच्चों को सोते छोड़ फैक्ट्री आया करते थे ताकि फैक्ट्री के उत्पादन में कमी न हो, दिन दूनी रात चौगुनी की रफ्तार से फैक्ट्री के माल विश्व मन्डी में टिक पायें। उस फैक्ट्री के मजदूरों की हालत एकदम देखिये क्या हो गई है और उसकी मैनेजमेन्ट अकड़ के चल रही है टाई लगा कर।

13 मजदूर मर गये उनका हिसाब आज तक नहीं दिया है। 100 मजदूर 58 साल उम्र पार कर चुके हैं। सात साल के वर्दी—जूते बाकी हैं। 1995—96 का ग्यारह प्रतिशत बोनस बाकी है। 1996—97 का बोनस बाकी है। अप्रेल से दिसम्बर हो चुका अब तक साल का इनक्रीमेन्ट नहीं दिया है। और मजदूर हैं कि आपस में विचार-विमर्श का कोई सिलसिला चला नहीं रहे हैं।

मशीन शॉप के मजदूर 30 साल से गर्म वर्दी पहनने के लिये प्रत्येक तीन साल पर रजिस्टर पर अपने हस्ताक्षर कर देते हैं लेकिन वर्दी है कि मजदूरों तक पहुँच नहीं रही है। 1965 में हितकारी पोट्रीज मैनेजमेन्ट ने शेयर बेचे थे, सभी मजदूरों ने दिल खोल कर शेयर खरीदे लेकिन आज तक उनका रुपया वापस नहीं किया गया है। 12.11.97 को अप्रेल महीने का बकाया वेतन दिया लेकिन अक्टूबर महीने का वेतन रोक दिया। मैनेजमेन्ट की चाल है कि मजदूरों को बिना कुछ लिये-दिये फैक्ट्री से बाहर करो लेकिन मजदूर अपनी तरफ से कोई मौका मैनेजमेन्ट को नहीं दे रहे हैं।

एक महिला मजदूर 9 साल मुकदमा लड़ने के बाद 19.11.97 को ड्युटी पर वापस आई है। .....अब उसने 9 साल मुकदमेबाजी में खर्च हुये पैसे तथा वेतन के लिये कानूनी दाँवपेच शुरू किये हैं।

28.11. 97 — हितकारी पोट्रीज का एक मजदूर

वी एक्स एल

मैं वी एक्स एल लिमिटेड, मथुरा रोड़, फरीदाबाद में नवम्बर 1994 से अप्रेल 1995 तक कैजुअल वरकर रहा हूँ। मेरा बोनस कम्पनी ने अभी तक नहीं दिया है। कम्पनी गेट से सेक्युरिटी वाले ही वापस कर देते हैं और बोल देते हैं कि अगले महीने आना। मैं दो साल से चक्कर काट रहा हूँ। मेरे जैसे अनेक कैजुअलों को वी एक्स एल मैनेजमेन्ट ने 1993 से अभी तक बोनस नहीं दिया है।

2.12. 1997 — कर्मवीर सिंह अत्री

लीडर और मजदूर

बड़ी श्रद्धा से गंगा जी में
नहा कर चूहा निकला।
दिखा सामने चन्दन घिसता
कुछी दूर पर बिल्ला।।

बोला ओ जजमान ठहर
जरा माथे तिलक लगाता जा।
कौन गाँव और कौन गोत्र का
है तू हमें बताता जा।।

चूहा बोला ओ पंडित
ना आऊँ तेरी भक्षणा में।
तिलक लगा कर खा जायेगा
पूरा मुझे दक्षिणा में।।

— **छोटू गुस्ताख**

★ स्टाकहोम से मिली खबरों में कहा गया है कि भारत के वित्तमन्त्री को इस वर्ष का अर्थशास्त्र का नोबेल पुरुस्कार इसलिये नहीं दिया जा सका कि वे मजदूरों के प्रोविडेन्ट फन्ड का पूरा का पूरा पैसा हड़प करने का कानून बनाने में असफल रहे। यदि वे ऐसा कोई कानून बना सके तो अगले वर्ष उनको यह पुरुस्कार अवश्य प्रदान किया जायेगा।

टी टी आई

14/6 मथुरा रोड़ स्थित ट्रैक्टल ट्रिफर में 150 की जगह अब 60 ही परमानेन्ट वरकर हैं और मैनेजमेन्ट ने यूनिफार्म, एल टी ए, मिल्क अलाउन्स जैसी सहुलियतें श्रम कानूनों के सैक्शन 9 का इस्तेमाल करके काट ली हैं। मजदूरों द्वारा आजमाई तीन यूनियनों और दो हड़तालों का नतीजा है यह।

साल-भर से काम कर रहे 60—70 नये वरकरों को वेज स्लिप, हाजरी कार्ड, ई एस आई कार्ड आदि कुछ नहीं दिया है। ई एस आई को की गई शिकायत पर कोई कार्रवाई नहीं की गई है।

परमानेन्ट वरकरों को चार साल से प्रोविडेन्ट फन्ड की रसीदें नहीं मिली हैं। नयों का पी एफ काटते हैं पर जमा नहीं करते।

(14.11.97 को एक जानकार से बातचीत।)

हिन्दुस्तान स्पोर्ट, लुधियाना (2)

मोल्डर एण्ड स्टील वरकर्ज यूनियन की अगुआई में हिन्दुस्तान स्पोर्ट प्रा. लि. अते हिन्दुस्तान इन्डस्ट्रीज के मजदूरों ने 19.10.97 को अपनी मीटिंग बसन्त पार्क में रखी और वहाँ से 300 मजदूरों की रैली के आगे-आगे उस कमीने मालक की अर्थी ले कर फैक्ट्री गेट पर गये और वहाँ एक घन्टे तक यातायात को रोके रहे तथा मालक के पुतले को जलाया और सियापा करते रहे। इसी तरह यह हड़ताल जारी रही और मालक अड़ा रहा। इसके तत्पश्चात मालक आगोश में आ कर 23.10.97 को फैसला करने पर उतारू हो गया और मालक ने कहा कि हम इन 30 मजदूरों में से 3 यूनियन लीडरों को हिसाब दे देंगे और बाकी 27 मजदूरों को काम पर ले जायेंगे। इसके बाद मजदूरों ने अपना फैसला भी सुना दिया कि तुम 3 मजदूरों को हिसाब देने का फैसला सुना रहे हो तो हम एक मजदूर को भी नहीं छोड़ेंगे, एक साथ काम करेंगे या हिसाब लेंगे। इसके बाद मालक ने (30) सभी मजदूरों को हिसाब देने का ऐलान कर दिया और सभी मजदूरों को अच्छी तरह से हिसाब दे दिया जिसमें कि जो मजदूर पाँच साल से कम के थे उनको 15 दिन की सर्विस और जो पाँच साल से ज्यादा के थे उनको 30 दिन की सर्विस एवं रुकी हुई बोनस भी दी। यह संघर्ष 23 दिन चला जिसमें की 15 दिन की टूटी दिहाड़ी भी देनी पड़ी।

इन मजदूरों ने जितने साहस से इस संघर्ष को लड़ा उसी तरह यदि सभी मजदूर संगठित हो करके अपने संगठन का अहसास करें तो निश्चय ही इन सरमायेदार मालकों को घुटने टेक कर हर मजदूर की माँग पूरी करनी ही होगी।

इस संघर्ष में हर प्रकार की मदद इन भाईचारा संगठनों ने दी: (1) पंजाब इन्डस्ट्रीयल वरकर्ज यूनियन लुधियाना, (2) जमहुरी अधिकार सभा लुधियाना, (3)डेमोक्रेटिक टीचर्स फ्रन्ट लुधियाना, (4) तर्कशील सोसाइटी लुधियाना, (5) अखिल भारतीय नेपाली एकता समाज कलकत्ता ग्रुप एवं दिल्ली ग्रुप, (6) पूर्वान्चल वैल्फेयर एसोसियेशन, (7) अखिल भारतीय उत्तर प्रदेश वैल्फेयर एसोसियेशन, (8) कीर्ती मजदूर यूनियन शहर सुधार कमेटी धूरी, (9) मेहनतकश संघर्ष केन्द्र पटियाला।

10.11.97 — ए. के. सिंह, लुधियाना

(**टिप्पणी** : यह जान कर बहुत दुख हुआ कि सभी 30 मजदूर साथियों को नौकरी से निकाल दिया गया है। मजदूरों को निकालने के लिये, छँटनी के लिये, हड़ताल एक सरल व सामान्य तरीका है। ज्यादा तकलीफदायक बात यह है कि हड़ताल को मजदूरों का संघर्ष, शानदार संघर्ष, बताया जाता है और मजदूरों की बलि को मजदूरों की जीत बता कर महिमामंडित किया जाता है। मिसालें अनगिनत हैं। चन्द उदाहरण हैं : **फरीदाबाद** में **ईस्ट इंडिया कॉटन मिल** में 1979 में हड़ताल के जरिये तीन हजार मजदूरों की छँटनी; **लरवानी शूज** में पिछले पन्द्रह सालों में तीन हड़तालों के जरिये हर बार सब पुराने मजदूरों को नौकरी से निकालना (1983 में 500, 1989 में 1000 और 1996 में 1500)। **बम्बई** में 1983 में हड़ताल के जरीये **60 कपड़ा मिलों** में नब्बे हजार मजदूरों की छँटनी। **इंग्लैण्ड** में 1984 में हड़ताल के जरिये 40 हजार **कोयला खदान** मजदूरों की छँटनी और वहीं **लीवरपूल** में हाल ही में हड़ताल के जरिये 500 **जहाज गोदी** मजदूरों की छँटनी।

उपरोक्त के सन्दर्भ में ही हमने पिछले अंक में लुधियाना से प्राप्त रिपोर्ट पर टिप्पणी में मजदूरों पर बड़े हमले की आशंका जाहिर की थी। इस अंक में प्रकाशित "हड़ताल" पर दो मजदूरों के विचारों पर गौर करना बहुत जरूरी बन गया है।)

भुगती बातें हड़तालों की

हड़ताल को मजदूरों द्वारा मैनेजमेन्ट से अपनी माँगें मनवाने का एक कारगर व आखरी हथियार के तौर पर माना जाता रहा है, प्रचारित किया जाता रहा है। हड़ताल के लिये मजदूरों में एकता का होना जरूरी माना जाता है। फूट में हड़ताल की टूट। आर-पार की लड़ाई। हड़ताल का मतलब मजदूरों द्वारा काम बन्द करना, करवाया जाना। डिपार्टमेन्ट के मजदूरों की हड़ताल। प्लान्ट की हड़ताल। फैक्ट्री की हड़ताल.....

मजदूरों का रोज फैक्ट्री में कई समस्याओं से जूझना। सुपरवाइजर-फोरमैन से झाड़, चिक-चिक का डर। काम का बोझ। असुरक्षा – अंग कटने व चोट लगने का डर। किसी छोटी-सी गलती पर चार्जशीट, सस्पैन्ड का डर। इत्यादि। परन्तु कभी-कभी सुपरवाइजर-फोरमैन के साथ हाथापाई, गाली-गलौज। रोज के काम के साथ और काम भी थोप देना। अपनी जगह से दूसरी जगह काम पर लगा देना। सुरक्षा के उपकरणों को न देना – अंग कट जाना, मौत हो जाना। सस्पैड-चार्जशीट इत्यादि। डिपार्टमेन्ट के अन्य मजदूरों में गुस्सा। किसी दिन चाय लेट से आती है तो सब आपस में चर्चा करने लगते हैं, "क्या बात है अभी तक चाय नहीं आई"। चाय-बीड़ी-पेशाब आठ घन्टे बिताने में राहत देते हैं और बातचीत करने का मौका भी। गुस्से में मैनेजमेन्ट और लीडर के पास जाना। हल न होना। काम बन्द। कुछ डिपार्टमेन्टों में काम बन्द होने पर पूरा प्लान्ट ही बन्द हो जाता है। काम चालू करवाने के लिये लीडरों द्वारा डराना, धमकाना, फुसलाना, लालच देना, अपने-पराये के नुक्ते आजमाना, सस्पेन्ड, डिसमिस। ज्यादा लफड़ा देख – हल। परन्तु जब यह पूरे प्लान्ट का मसला होता है और अलग-अलग डिपार्टमेन्टों द्वारा विरोध में कदम उठने लगते हैं तो एक डिपार्टमेन्ट की ऐसी हड़ताल पर उन मजदूरों को साथ ले कर उनकी नौकरी बचाने के नाम पर लीडरों या लीडरी के दावेदारों द्वारा मैनेजमेन्ट की शह पर पर "हमारा साथ दो" का नारा। एकता के नाम पर पूरा प्लान्ट बन्द करवा देना। कुछ को डिसमिस करना। नौकरी बचाने को, डिसमिस वाले मसले को उभारना। अगुआई करनां। गर्मा-गर्म बातें। असली मसला आया-गया करना।

मुख्य फैक्ट्री में गड़बड़, प्रोडक्शन बन्द होने, माल की जरूरत न होने पर सहायक, माल सप्लाई करने वाली, पार्ट बनाने वाली कम्पनियों में छोटे मसलों पर माहौल गर्म कर काम बन्द करवाना। ले आफ के बदले हड़ताल! नई मशीनों के विरोध में, थोक में ट्रान्सफर के मसले, गेट रोकने, ठेकेदारी प्रथा, किसी मशीन पर परमानेन्ट की जगह ठेके पर काम करना के मुद्दों पर हड़ताल।

पूरी फैक्ट्री के अलग-अलग डिपार्टमेन्टों की रोज की कई अलग-अलग समस्याओं को टालने के लिये इकट्ठा कर तीन-चार साल में एक बार लम्बा-चौड़ा माँगपत्र बना कर मजदूरों को आश्वासन देना कि एग्रीमेन्ट में सब समस्या हल कर देंगे। डिपार्टमेन्ट लीडरों द्वारा डिपार्टमेन्ट की समस्यायें माँगपत्र में रखवाई जाती हैं। इस पर मीटिंगें। लम्बी बातचीत/नेगोसियेशन। कम्पनी के हालात के अनुसार मजदूरों के विरोध को टालना या उकसा कर हड़ताल करना। हवा निकालना। एग्रीमेन्टों को गलत सुनाना, उल्टा मैनेजमेन्टों की शर्तों को थोपना। व्यवहार में लागू होने पर लीडरों के खिलाफ गुस्सा। लीडरी के दावेदारों द्वारा माहौल गरम करना। नये लीडरों के समर्थन में एकता के नाम पर काम बन्द। आश्वासन – हम दिलायेंगे। मीटिंगों में गर्मागर्म भाषणों से माहौल गर्म करना। हड़ताल के लिये बहुमत की बातें करना। साइड मीटिंगें। मैनेजमेन्ट द्वारा कागज पर साइन करके अन्दर जाने की बातें। मना करना, हड़ताल घोषित करना।

हड़ताल हो जाने पर मीटिंगों का सिलसिला। संघर्ष समिति। गेट पर बैठना। कम्पनी के अन्दर अन्य मजदूरों का ताश खेलना। तम्बू लगाना। चन्दा। जलूस। ज्ञापन। कागजी कार्रवाई। धरना-प्रदर्शन-एकता बनाये रखना। 5–10 लीडरों का सक्रिय होना। भागदौड़ : दफ्तरों में बड़े लीडरों के घरों-दफ्तरों में राय लेना, मिलना। बाकी सब मजदूरों से एकता बनाये रखने की अपील। मजदूरों की एकता सब कुछ हासिल कर सकती है। मजदूर गेट देखें। ताश खेलें। फैसले की इन्तजारी करें। हमारे मुँह की ओर देखें। लीडरों से पूछें क्या हो रहा है। क्या-क्या चल रहा है। क्या-कुछ किसने बोला, आश्वासन दिया, कहाँ तक बात पहुँची।

एकता के नाम पर डी.एल.सी. के पास जलूस। जरूरत पड़े तो साइन बहुमत दिखाना। डी.सी. के यहाँ जलूस-ज्ञापन-धरना। एकता दिखाने हरियाणा भवन पर प्रदर्शन। डायरेक्टर की कोठी पर जलूस। हैड आफिस जलूस। एस.पी. को अपनी एकता दिखाना। मैनेजमेन्ट बात नहीं कर रही। अपनी एकता दिखाओ। ज्यादा से ज्यादा संख्या में मीटिंगों में पहुँचें ताकि मैनेजमेन्ट को पता चले कि हम में एकता है। गर्मागर्म भाषण मैनेजमेन्ट को सुना कर। मैनेजमेन्ट सुन ले, हम मैनेजमेन्ट की मजदूर-विरोधी हरकतें बर्दाशत नहीं करेंगे। आर-पार की लड़ाई है। सबक सिखा देंगे। मैनेजरों को गाली। सारा दोष एक मैनेजर के सिर मढना। यदि वह हट जाये तो पूरी समस्या ही हल हो जाये।

कोई मजदूर सवाल पूछे या अपनी बात कहे तो उसे बैठा देना, जबरदस्ती। ये तोड़-फोड़ वाले हैं। असामाजिक तत्व हैं। मैनेजमेन्ट को शह मिलती है, हम में कमजोरी आती है। बात बनने नहीं देते। चन्दे का हिसाब माँगने पर : मैनेजमेन्ट के दलाल, हड़ताल तोड़ना चाहते हैं। मैनेजमेन्ट–प्रशासन हमारी फूट से फायदा उठा रहे हैं। हमारी एकता से तो मैनेजमेन्ट बात करने को तैयार हुई है। नेगोसियेशन करने की तारीख दी है। डी.एल.सी. के यहाँ तारीख है। डी.सी. साहब ने भी आश्वासन दिया है। बात चल रही है। समझौता जल्दी ही हो जायेगा पर इस बार पूरी समस्याओं को हल करके ही रहेंगे। यहाँ तक बात पहुँच चुकी है। फलाँ मैनेजर ने यह बात कही। डायरेक्टर ने यह बात कही। डी.सी. ने यह बात की, डी.एल.सी.ने यह बात की। हमारे पक्ष में बात चल रही है। प्रशासन हमारे पक्ष में है। छोटे मैनेजरों से हम बात नहीं करेंगे। डायरेक्टर से बात करेंगे। डी एल सी साहब बात करायेंगे। एस.पी. साहब बात करायेंगे। एस.पी. साहब बीच में रहेंगे। साहब ने मजदूरों के पक्ष में बोला है। आश्वासन दिया है। इस मीटिंग में फैसला हो जायेगा। थोड़ी-सी रड़क रह गई है।

नेगोसियेशनों का लम्बा दौर। डी.एल.सी. ने मामला चन्दीगढ भेज दिया है। एल.सी. साहब तो डायरेक्टर को जरूर बुलायेंगे। चन्दीगढ में फैसला हो जायेगा। आप लोग डटे रहो। एकता बनाये रखो। गेट पर दूसरी फैक्ट्रियों के लीडरों की एकता। अपनी यूनियन वाली अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों को समर्थन में गेट पर बुलाना। फैक्ट्री बन्द करा देंगे। पार्टी लीडर आ रहे हैं, उनके भाषण सुनने ज्यादा से ज्यादा संख्या में आयें और एकता दिखायें। यूनियन दफ्तर में हाजरी लगायें। मन्त्री से हमारी पहुँच है। मन्त्री साहब के पास जा रहे हैं। प्रधानमन्त्री, मुख्यमंत्री आ रहे हैं, ज्ञापन देंगे। संघर्ष जारी रखो। मन्त्री के साथ मीटिंग है। हमारे पक्ष में जरूर बोलेंगे। रोड़ जाम करेंगे। रेल रोकेंगे। अन्य हड़ताल वाली फैक्ट्रियों के मजदूरों के साथ मिल कर जलूस निकालेंगे, मीटिंग करेंगे। ज्ञापन देंगे। इस सारे दौर में मजदूर आश्वासनों को थोक में खा कर बदहजमी के शिकार हो जाते हैं।

ड्युटी की देर हो रही है। पूरा नहीं लिख पाया हूँ। जल्दी में लिखा है। पूरा इकट्ठा लिख दिया। बाकी जरूरी हो तो बाद में लिख दूँगा।

7.11.97 – भुक्तभोगी

"विशेष परिस्थितियाँ" – यह भाषा सरकारों, मैनेजमेन्टों, लीडरों की है। खास परिस्थितियाँ कुछ नहीं होती। बद से बदतर होती हालात मजदूरों के लिये आम बात है।

देखी बातें हड़तालों की

फैक्ट्री में कार्यरत मजदूरों के सामने तरह-तरह की समस्यायें होती हैं। अमूमन न्यूनतम मजदूरी नहीं दी जाती। कार्यस्थल पर अक्सर दुर्घटनायें होती रहती हैं। प्रोडक्शन बढाने के लिये मैनेजमेन्ट से चिक-चिक होती रहती है। मजदूरों से कार्यस्थल पर दुर्व्यवहार आम है।

इससे निजात पाने के लिये मजदूरों द्वारा इस या उस यूनियन, लीडर के पास भागदौड़ और अपनी फैक्ट्री में यूनियन बनाने के प्रयास। समस्याओं पर मजदूर समूह में मैनेजमेन्टों से बात नहीं करते हैं, या नहीं कर पाते हैं। नतीजा यूनियन लीडर द्वारा डींग मार कर चालबाजियों में उलझा देने में होता है। इन उलझाव में हड़ताल भी शामिल है। हड़ताल से पहले यूनियन लीडर द्वारा दिखाये जाते सब्जबाग, मैनेजमेन्ट को धमकाती शब्दावली और लेबर कोर्ट में मैनेजमेन्ट को तारे दिखाने की शेखी हड़ताल का पूर्वाभ्यास होता है।

हड़ताल के प्रारम्भ में मजदूरों का उत्साहित होना और बड़बोलेपन का शिकार होना। यूनियन बनते ही सभी समस्याओं का समाधान हो जायेगा का भ्रम। फिर कोर्ट में तरह-तरह की केसें और इसी के साथ लीडरों की चन्दा उगाही, भागदौड़। कुछ सप्ताहों, दिनों में ही चेहरा मुर्झा जाता है, निराशा खुद-ब-खुद उभर कर आ जाती है। पगारों पर घिसटती जिन्दगी कहीं और पगार की जुगाड़ में लग जाती है।

मैनेजमेन्ट मजदूरों के इलाकाई और जातिगत मनोभावों को उभारती है। अतीत के बैरभाव को भुनाती है। फैक्ट्री लीडरों में तोड़ फोड़ और उनमें से चन्द को ठेकेदार बनाने या ज्यादा तनखा देने का लालच देती है। इक्का -दुक्का मजदूरों को धमका के या पुलिस केस बनाने का डर दिखा कर हड़ताल को तोड़ने या विफल करने का प्रयास करती है।

देखने में आया है कि मजदूर जब फैक्ट्री गेट पर धरना दे रहे होते हैं तो मैनेजमेन्ट 'स्टे आर्डर' ले आती है। कोर्ट भी मैनेजमेन्ट के प्रति 'उदार' रुख लिये दिखती है।

मैनेजमेन्टों का एक तरीका पुलिस के सहयोग से फैक्ट्री में प्रोडक्शन जारी रखने का भी है। लीडरों में से किसी को ठेकेदार बना कर उसके गुट से पुलिस के संरक्षण में प्रोडक्शन जारी रखती है। लेबर कोर्ट की भूमिका भी मजदूरों को बिखेरने में महत्वपूर्ण होती है। लम्बी-लम्बी तारीखें देना। मुद्दे से हट कर बातें करना इत्यादि। थके-मांदे हड़ताली मजदूर देर-सवेर बिखर जाते हैं।

कई बार मैनेजमेन्ट मजदूरों की छँटनी के लिये भी हड़ताल प्रायोजित करती है। ऐसे मौकों पर मैनेजमेन्ट जानबूझकर ऐसी स्थिति उत्पन्न करती है। मसलन, कार्यस्थल पर लोअर मैनेजमेन्ट को मजदूरों से दुर्व्यवहार के लिये उकसाना। लीडरों द्वारा अनसूझे/अनबूझे मुद्दों को उठवाना। मैनेजमेन्ट इस तरह माहौल हड़ताल या तालाबन्दी के अनुकूल करती है।

लीडरों की भूमिका इस दौरान इस कोर्ट से उस कोर्ट में भागमभाग, मैनेजमेन्ट से नेगोसियेशन, लम्बी-चौड़ी बातें, कभी-कभार जलूस-धरना करने की होती है। कुछ महीने चन्दा उगाही और मजदूरों को कहीं काम पर लग जाने की सलाह के रूप में भी आती है। वकीलों की बदमाशी, बिकने के किस्से-कहानियाँ भी लीडर सुनते-सुनाते-फैलाते रहते हैं। कई बार इस-उस यूनियन या झँडे बदलने की नौटंकी भी लीडर करते हैं। कोर्ट के भरोसे लगाये रखना। इस-उस तारीख पर आशा रखने की बातें होती हैं। लीडर मजदूरों को बिखेरने का काम ही करते हैं।

— साक्षी

बोलते गत्ते

मार्च 1996 से झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट ने 2183 मजदूरों के वेतन नहीं दिये हैं। अपनी तनखायें लेने के लिये क्या कुछ वे कर चुके हैं यह फरीदाबाद में कार्यरत तीन लाख मजदूरों को बताने के लिये झालानी टूल्स के कुछ मजदूर गत्तों पर अपनी बातें लिख कर तीन महीनों से रोज सुबह की शिफ्टों के समय अलग-अलग सड़कों के किनारे खड़े हो रहे हैं। अन्य फैक्ट्रियों के मजदूर चौंक रहे हैं, चिन्तित हो रहे हैं, सोच रहे हैं जिससे सरकारी-तन्त्र और मैनेजमेन्ट-तन्त्र पर असर पड़ रहा है। झालानी टूल्स मजदूरों के कुछ गत्तों पर लिखा है :—

★ 20 महीनों से तनखा नहीं दी है।
★ मैनेजमेन्ट तनखा नहीं दे तो क्या करें ?
★ कई लीडर बदल कर देख लिये — हर बार तवे से चूल्हे में।
★ तीन झन्डे बदल कर देख लिये — वही ढाक के तीन पात।
★ डी. एल. सी. को शिकायतें की — कोई असर नहीं।
★ श्रम विभाग कानून तोड़ने में सहयोग कर रहा है।
★ डी.सी. को शिकायतें की — टाल मटोल कर रहा है।
★ चन्दीगढ शिकायतें की — कोई असर नहीं।
★ राज्य और केन्द्र के श्रम सचिवों को कई शिकायतें की — कोई असर नहीं।
★ राज्य एवं केन्द्र के श्रम मन्त्रियों को कई शिकायतें की — कोई असर नहीं।
★ मुख्यमंत्री को भी शिकायतें की हैं लेकिन कोई असर नहीं।
★ प्रधानमंत्री को शिकायतें की — कोई असर नहीं ।
★ सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को शिकायतें की — कोई असर नहीं।
★ मैटल बॉक्स, डेल्टा टूल्स, इलेक्ट्रोनिक्स और अब झालानी टूल्स।
कल किसकी बारी ?

सोचने की बातें

ऑल एस्कोर्ट्स के हों चाहे प्लान्ट स्तर के लीडर , एस्कोर्ट्स ग्रुप में कार्यरत मजदूरों ने इतनी नौटंकियाँ देख ली हैं कि लीडरों के प्रति कम ही भ्रम इन मजदूरों में नजर आते हैं। इधर एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट प्लान्टवाइज मजदूरों पर बड़े हमले करने के लिये पका रही कड़वी खिचड़ी में मिनी एग्रीमेन्टों का जहर मिला रही है। ऐसे में एस्कोर्ट्स ग्रुप में कार्यरत प्रत्येक मजदूर द्वारा उन कदमों के बारे में सोचना तथा अपने सहकर्मियों से विचार-विमर्श करना जरूरी हो गया है जिन्हें मजदूर आपस में मिल कर उठा सकते हैं तथा जिनके लिए किसी लीडर का मुँह ताकने की कोई आवश्यकता नहीं हैं। रंग-बिरंगे लीडरों के सहयोग से आगे-पीछे करके प्रत्येक प्लान्ट में मजदूरों पर बड़े हमले करने को तैयार हो चुकी एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट को रोकने और पीछे धकेलने के लिए सोचने-विचारने के वास्ते यही समय है।

गजब के चिड़ियाघर पहुँचे हैं हम
नौकरी की तलाश में भटकते हुये
काम की तो छोड़ो बात तुम यारो
यहाँ तो हँसने और रोने के
पैसे काटे और जोड़े जाते हैं।

नवरात्र में झूमने का नशा उतरा ही नहीं था कि दफ्तर में दूसरे उत्सव की तैयारी शुरू हो गई। हफ्ता-भर चली तैयारी। नाच-गाने, खेल-तमाशे का इन्तजाम करा गया। लोग रात-रात जाग कर तैयारी में जुटे रहे। हँसी-मजाक की लहरें बहने लगी कम्प्युटर के खेतों में। काम से मिली छुट्टी ने खुशी के रंग से रंगीन बना रखा था फैक्ट्री के रूखे दीवार, माहौल को।

चिड़ियाघर की सजावट के लिये हाथ में कैंची और रंगीन कागज के टुकड़े लिये मैं भी नक्शे काटने में मगन था। इतने में एक दोस्त ने आ कर पूछा," कल अन्ताक्षरी में भाग ले रहा है न ?" मैंने कहा, " भाग लेना कोई जरूरी तो नहीं।" " नहीं भाई, भाग नहीं लोगे तो तुम्हारे पैसे काट लिये जायेंगे।"

— पार्थ

सड़कों पर यह अखबार बाँटनेवाले कोई दिहाड़ी नहीं लेते । हम सब यह फ्री में करते हैं । जो मजदूर पैसे देना चाहते हैं वे किसी भी बाँटनेवाले-वाली को बेझिझक पैसे दे सकते हैं ।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।